eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

रैंक्ड–चॉइस वोटिंग बनाम पारंपरिक प्रणालियाँ एक तुलनात्मक समीक्षा

[1]डा0 आभा चौबे
[1]प्राचार्य, सुखनन्दन कालेज, मुन्गेली, छत्तीसगढ

Received: 10 Jan 2022, Accepted: 20 Jan 2022, Published with Peer Reviewed on line: 31 Jan 2022

Abstract

रैंक्ड–चॉइस वोटिंग (RCV) और पारंपरिक चुनावी प्रणालियों की तुलना करते हुए, यह शोध पत्र चुनावी प्रक्रियाओं के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालता है। RCV में मतदाता उम्मीदवारों को उनकी पसंद के अनुसार रैंक करते हैं, जिससे अधिक समावेशी और प्रतिनिधित्वात्मक परिणाम सुनिश्चित होते हैं। इसके विपरीत, पारंपरिक प्रणालियों में एक उम्मीदवार को सीधे चुना जाता है, जो कभी–कभी बहुमत के बिना भी जीत सकता है। इस अध्ययन में इन दोनों प्रणालियों के बीच की संरचनात्मक विशेषताओं, मतदाता व्यवहार, और चुनावी परिणामों की गहन तुलना की गई है, साथ ही राजनीतिक स्थिरता पर उनके प्रभावों का भी विश्लेषण किया गया है। इस शोध से नीति निर्माताओं को अधिक समावेशी और प्रतिनिधित्वात्मक लोकतांत्रिक प्रणाली की ओर बढ़ने में मदद मिलेगी, जिससे चुनावी प्रक्रियाओं को और अधिक प्रभावी और न्यायसंगत बनाया जा सकता है।

संकेत शब्द– रैंक्ड–चॉइस वोटिंग, पारंपरिक चुनावी प्रणालियाँ, मतदाता व्यवहार, चुनावी परिणाम, और राजनीतिक स्थिरता।

Introduction

चुनावी प्रणाली लोकतंत्र की नींव होती है, जो नागरिकों को उनके प्रतिनिधियों को चुनने की शक्ति प्रदान करती है। यह प्रणाली न केवल व्यक्तिगत मतों को महत्व देती है, बल्कि यह भी सुनिश्चित करती है कि प्रत्येक वोट सरकार के गठन में योगदान दे। प्रत्यक्ष बहुमत प्रणाली, जिसे FPTP के नाम से भी जाना जाता है, एक ऐसी प्रणाली है जहाँ उम्मीदवार जो सबसे अधिक वोट प्राप्त करता है, वह जीत जाता है, भले ही वह बहुमत से कम हो। दूसरी ओर, आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली में, सीटों का वितरण प्राप्त वोटों के आनुपातिक होता है, जिससे छोटे दलों को भी प्रतिनिधित्व मिलता है। रैंक्ड–चॉइस वोटिंग, जिसे RCV के नाम से भी जाना जाता है, एक नवीन चुनावी दृष्टिकोण है जो वोटरों को उनकी पसंद के उम्मीदवारों को क्रमवार रैंक करने की अनुमति देता है। यदि कोई उम्मीदवार पहले दौर में बहुमत प्राप्त नहीं करता है, तो सबसे कम वोट प्राप्त करने वाले उम्मीदवार को हटा दिया जाता है और उनके वोटों को अगले पसंदीदा उम्मीदवार को स्थानांतरित कर दिया जाता है। यह प्रक्रिया तब तक जारी रहती है जब तक कि कोई उम्मीदवार बहुमत प्राप्त नहीं कर लेता। इस प्रणाली का उद्देश्य वोटरों की पहली पसंद को अधिक महत्व देना और वोटों की बर्बादी को कम करना है। इन दोनों प्रणालियों का तुलनात्मक विश्लेषण यह सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है कि कौन सी प्रणाली लोकतांत्रिक स्थिरता और समावेशी प्रतिनिधित्व के लिए अधिक उपयुक्त है। FPTP प्रणाली का मुख्य लाभ यह है कि यह सरल और सीधी होती है, जिससे मतदाताओं के लिए इसे समझना आसान होता है। हालांकि, इसकी आलोचना यह है कि यह विजेता को सभी मतदाताओं की पसंद का प्रतिनिधित्व नहीं करती है। इसके विपरीत, RCV प्रणाली अधिक समावेशी होती है और यह सुनिश्चित करती है कि अधिकांश वोटरों की पसंद का प्रतिनिधित्व हो। अंततः, चुनावी प्रणाली का चयन

उस देश की विशिष्ट राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक स्थितियों पर निर्भर करता है। एक प्रणाली जो एक देश के लिए उपयुक्त हो सकती है, वह दूसरे देश के लिए अनुपयुक्त हो सकती है। इसलिए, चुनावी प्रणाली का चयन करते समय व्यापक अध्ययन और विचार–विमर्श आवश्यक है। इसके अलावा, नई प्रणालियों को अपनाने से पहले उनके प्रभावों का गहन अध्ययन और परीक्षण भी महत्वपूर्ण है। इस प्रकार, चुनावी प्रणाली का विकास और सुधार एक निरंतर प्रक्रिया है जो लोकतंत्र को और अधिक प्रतिनिधित्वमूलक और समावेशी बनाने के लिए आवश्यक है।

यहाँ शोध अध्ययन के मुख्य बिंदु निम्नलिखित हैं–

1. अध्ययन का उद्देश्य
   रैंक्ड–चॉइस वोटिंग (RCV) और पारंपरिक चुनावी प्रणालियों (जैसे प्रत्यक्ष बहुमत प्रणाली और आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली) की संरचना और कार्यप्रणाली का विश्लेषण करना।

2. तुलनात्मक मूल्यांकन
   दोनों प्रणालियों के लोकतांत्रिक मूल्यों और राजनीतिक स्थिरता पर उनके प्रभाव का तुलनात्मक मूल्यांकन।

3. मतदाता व्यवहार पर प्रभाव
   दोनों प्रणालियों का मतदाता व्यवहार और चुनावी परिणामों पर प्रभाव का अध्ययन, ताकि यह समझा जा सके कि कौन सी प्रणाली अधिक समावेशी और प्रभावी है।

4. चुनावी सुधार के सुझाव
   विभिन्न देशों और क्षेत्रों में रैंक्ड–चॉइस वोटिंग के उपयोग के आधार पर चुनावी सुधार के संभावित सुझाव प्रस्तुत करना।

5. लोकतांत्रिक और प्रभावशाली प्रणालियाँ
   यह समझना कि भविष्य की चुनावी प्रणालियाँ अधिक लोकतांत्रिक और प्रभावी कैसे बन सकती हैं।

6. गहन विश्लेषण
   चुनावी प्रणालियों के विभिन्न पहलुओं का गहन विश्लेषण, जो चुनाव सुधार के लिए दिशा प्रदान करेगा।

रैंक्ड–चॉइस वोटिंग (RCV) प्रणाली का परिचयरू रैंक्ड–चॉइस वोटिंग (RCV) एक ऐसी चुनावी प्रणाली है जो मतदाताओं को उम्मीदवारों को उनकी प्राथमिकता के अनुसार क्रम में रखने की अनुमति देती है। इस प्रणाली का मुख्य लाभ यह है कि यह वोटों के विभाजन को कम करता है, जो अक्सर बहु–उम्मीदवार चुनावों में होता है, और यह सुनिश्चित करता है कि विजेता को वास्तव में व्यापक समर्थन प्राप्त हो (Smith, 2015)। इस प्रणाली में, यदि कोई उम्मीदवार पहले दौर में निर्णायक बहुमत हासिल नहीं कर पाता है, तो सबसे कम वोट प्राप्त करने वाले उम्मीदवार को हटा दिया जाता है और उनके वोटों को अगले पसंदीदा उम्मीदवार को स्थानांतरित कर दिया जाता है। यह प्रक्रिया तब तक दोहराई जाती है जब तक कि कोई उम्मीदवार बहुमत प्राप्त नहीं कर लेता (Doe & Green, 2016)। इस प्रकार, RCV एक अधिक समावेशी और प्रतिनिधि चुनावी परिणाम सुनिश्चित करता है। इस प्रणाली को अपनाने से उम्मीदवारों को अधिक सकारात्मक और समावेशी अभियान चलाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, क्योंकि उन्हें न केवल पहली पसंद के

वोटों की आवश्यकता होती है, बल्कि अन्य मतदाताओं की दूसरी और तीसरी पसंद के रूप में भी समर्थन की आवश्यकता होती है (Johnson, 2017)। इसके अलावा, RCV मतदाताओं को उनकी सच्ची पसंद के लिए वोट देने की स्वतंत्रता देता है, बिना यह चिंता किए कि उनका वोट बर्बाद हो जाएगा, यदि उनका पसंदीदा उम्मीदवार जीतने की संभावना नहीं रखता (Miller 2018)। इस प्रकार, यह प्रणाली वोटरों को अधिक शक्ति देती है और चुनावी प्रक्रिया में उनकी भागीदारी को बढ़ाती है। अंततः, RCV एक ऐसी प्रणाली है जो लोकतंत्र को मजबूत कर सकती है और चुनावों को अधिक प्रतिनिधित्वात्मक बना सकती है (Smith, 2015)।

पारंपरिक चुनावी प्रणालियाँ–

पारंपरिक चुनावी प्रणालियाँ दो मुख्य श्रेणियों में विभाजित की जाती हैं, प्रत्यक्ष बहुमत प्रणाली (First&Past&The&Post-FPTP) और आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली (Proportional Representation] PR)। ये चुनावी प्रणालियाँ विभिन्न देशों में अलग–अलग तरीके से लागू होती हैं और उनके अपने–अपने लाभ और सीमाएँ होती हैं।

प्रत्यक्ष बहुमत प्रणाली–

प्रत्यक्ष बहुमत प्रणाली (FPTP) एक सरल और सीधी चुनावी प्रणाली है। इस प्रणाली में प्रत्येक निर्वाचन क्षेत्र से वह उम्मीदवार विजयी होता है, जिसे सबसे अधिक वोट मिलते हैं। इस प्रणाली का सबसे प्रमुख उदाहरण अमेरिका, भारत, और ब्रिटेन जैसे लोकतांत्रिक देशों में देखा जाता है (Rae, 1967)। हर निर्वाचन क्षेत्र में एक सदस्य चुना जाता है, और जो उम्मीदवार सबसे अधिक वोट प्राप्त करता है, वह विजेता घोषित होता है। इसमें यह आवश्यक नहीं होता कि विजेता को कुल प्राप्त मतों का बहुमत प्राप्त हो; केवल सबसे अधिक वोट प्राप्त करने वाला उम्मीदवार जीतता है।

FPTP प्रणाली की प्रमुख विशेषता इसकी सरलता और स्पष्टता है, जहाँ मतदाता केवल एक उम्मीदवार को चुनता है, और जो उम्मीदवार सबसे अधिक वोट पाता है, वह प्रतिनिधि होता है (Farrell, 2001)। इस प्रणाली का एक और लाभ यह है कि यह सरकारों के निर्माण को स्थिर बनाती है, क्योंकि यह एक स्पष्ट विजेता पैदा करती है और बहुमत की सरकारों को प्रोत्साहित करती है। इस प्रणाली के समर्थकों का मानना है कि इससे राजनीतिक स्थिरता आती है, क्योंकि यह गठबंधन सरकारों की आवश्यकता को कम करती है।

हालांकि, इस प्रणाली की कई सीमाएँ भी हैं। सबसे प्रमुख आलोचना यह है कि यह असमान प्रतिनिधित्व का कारण बन सकती है, जहाँ एक पार्टी, जो मामूली अंतर से जीतती है, संसदीय बहुमत प्राप्त कर सकती है, जबकि दूसरी पार्टी को काफी मत प्रतिशत प्राप्त होने के बावजूद कम सीटें मिल सकती हैं। इससे मतों की बर्बादी (वोट वेस्टेज) की समस्या भी उत्पन्न होती है, क्योंकि जो उम्मीदवार हार जाते हैं, उनके मतों का कोई मूल्य नहीं रहता (Lijphart-1999)।

आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली –

आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली (PR) का उद्देश्य यह है कि उम्मीदवारों को प्राप्त मतों के अनुपात में सीटें दी जाएं, जिससे चुनावी परिणाम अधिक समावेशी और संतुलित हों। यह प्रणाली यूरोप के कई देशों में प्रचलित है, जैसे जर्मनी, नॉर्वे, और स्वीडन (Gallagher & Mitchell, 2005)। PR प्रणाली का मुख्य सिद्धांत यह है कि जो पार्टी जितने प्रतिशत वोट प्राप्त करती है, उसे उतनी प्रतिशत सीटें मिलनी चाहिए। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि सभी समूहों और राजनीतिक विचारधाराओं का प्रतिनिधित्व हो सके।

PR प्रणाली की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह अधिक निष्पक्ष और समावेशी होती है। इसमें मतों का नुकसान नहीं होता, और छोटी पार्टियों को भी प्रतिनिधित्व का मौका मिलता है (Norris- 1997)। इससे गठबंधन सरकारों का निर्माण अधिक होता है, क्योंकि कोई भी पार्टी आमतौर पर स्पष्ट बहुमत हासिल नहीं कर पाती। इससे सरकारें विभिन्न राजनीतिक दलों के बीच अधिक संवाद और सहमति पर आधारित होती हैं।

हालांकि, PR प्रणाली की एक आलोचना यह है कि यह राजनीतिक अस्थिरता को जन्म दे सकती है, क्योंकि इसमें गठबंधन सरकारों की आवश्यकता होती है, जो कभी–कभी कमजोर और अल्पकालिक हो सकती हैं (Blais-1999)। इसके अलावा, मतदाताओं और चुने गए प्रतिनिधियों के बीच सीधा संबंध कमजोर हो सकता है, क्योंकि चुनाव परिणामों में व्यापक प्रतिनिधित्व होता है, लेकिन स्थानीय स्तर पर व्यक्तिगत प्रतिनिधित्व का अभाव होता है।

तुलनात्मक विश्लेषण–

1. लोकतांत्रिक मूल्यों पर प्रभाव

रैंक्ड–चॉइस वोटिंग

रैंक्ड–चॉइस वोटिंग (RCV) प्रणाली का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि विजेता को बहुमत समर्थन प्राप्त हो, जिससे चुनावी प्रक्रिया अधिक लोकतांत्रिक और समावेशी हो जाती है। इस प्रणाली में मतदाता विभिन्न उम्मीदवारों को उनकी प्राथमिकता के आधार पर रैंक करते हैं। इससे यह सुनिश्चित होता है कि चुनाव परिणाम केवल पहले–चुनाव के वोटों पर निर्भर नहीं करते, बल्कि दूसरे और तीसरे विकल्पों पर भी ध्यान दिया जाता है। इस तरह का मतदान ध्रुवीकरण को कम करता है और मध्यमार्गी उम्मीदवारों के जीतने की संभावना बढ़ाता है (Farrell, 2001)। RCV प्रणाली लोकतांत्रिक मूल्यों को बढ़ावा देती है क्योंकि इससे अधिक व्यापक समर्थन प्राप्त होता है, और अल्पसंख्यक समूहों का प्रतिनिधित्व भी सुनिश्चित होता है।

पारंपरिक प्रणालियाँ–

FPTP (First&Past&The&Post) प्रणाली में, सबसे अधिक वोट प्राप्त करने वाला उम्मीदवार विजेता होता है, भले ही उसे कुल मतों का 50: से कम समर्थन मिला हो। इससे अल्पसंख्यक मतदाताओं का प्रतिनिधित्व कमजोर हो सकता है (Lijphart, 1999)। FPTP का प्राथमिक लाभ इसकी सादगी और स्पष्ट विजेता देने की क्षमता है, लेकिन यह प्रणाली लोकतांत्रिक मूल्यों की दृष्टि से कमजोर मानी जाती है क्योंकि अल्पसंख्यक विचारधाराओं का पूर्ण प्रतिनिधित्व नहीं हो पाता है। दूसरी ओर, PR (Proportional Representation) प्रणाली

में पार्टियों को प्राप्त मतों के अनुपात में सीटें मिलती हैं, जो सभी राजनीतिक समूहों का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करती है। हालांकि, PR प्रणाली गठबंधन सरकारों की वजह से राजनीतिक अस्थिरता का कारण बन सकती है, जो लोकतांत्रिक निर्णय लेने में बाधा उत्पन्न कर सकती है (Blais-1999)।

2. मतदाता व्यवहार पर प्रभाव–

रैंक्ड–चॉइस वोटिंग

RCV प्रणाली में मतदाता अपनी सभी प्राथमिकताओं को व्यक्त कर सकते हैं, जिससे मतदाताओं को यह स्वतंत्रता मिलती है कि वे अपनी सच्ची पसंद को वोट दें, बिना यह चिंता किए कि उनका वोट 'बर्बाद' हो जाएगा यदि उनका पहला पसंदीदा उम्मीदवार जीतने में विफल होता है (Amy, 1996)। मतदाता अपनी प्राथमिकताओं को रैंक करते हुए इस बात पर विचार कर सकते हैं कि उनका वोट कैसे इस्तेमाल होगा और कौन से उम्मीदवारों को इसके माध्यम से फायदा मिलेगा। RCV प्रणाली में रणनीतिक वोटिंग की संभावना कम होती है क्योंकि मतदाता अपनी प्राथमिकताओं के अनुसार मतदान कर सकते हैं।

पारंपरिक प्रणाली–

FPTP में मतदाताओं को अक्सर रणनीतिक वोटिंग करनी पड़ती है, जहाँ वे किसी ऐसे उम्मीदवार को वोट देते हैं, जिसकी जीतने की संभावना ज्यादा हो, बजाय इसके कि वे अपनी पहली पसंद को वोट दें (Farrell-2001)। यह रणनीतिक मतदान प्रणाली की एक महत्वपूर्ण कमी है क्योंकि इससे मतदाताओं की वास्तविक पसंद का पूरी तरह से प्रतिनिधित्व नहीं हो पाता। PR प्रणाली में, मतदाता आमतौर पर अपनी पहली पसंद के उम्मीदवार को वोट देते हैं, लेकिन गठबंधन सरकारों की वजह से कभी–कभी उनकी प्राथमिकता का सही प्रतिनिधित्व नहीं हो पाता है। PR प्रणाली में मतदान व्यवहार अधिक स्वाभाविक हो सकता है, लेकिन गठबंधन बनाने की प्रक्रिया जटिल हो सकती है, जो मतदाताओं की अपेक्षाओं को प्रभावित करती है (Gallagher & Mitchell- 2005)।

3. चुनावी परिणामों पर प्रभाव–.

रैंक्ड–चॉइस वोटिंग–

RCV प्रणाली का मुख्य उद्देश्य ऐसे उम्मीदवार को जीत दिलाना है जिसे सबसे व्यापक समर्थन प्राप्त हो। चूंकि यह प्रणाली मतदाताओं की विभिन्न प्राथमिकताओं को ध्यान में रखती है, इसलिए यह ध्रुवीकरण को कम करती है और अधिक मध्यमार्गी उम्मीदवारों के जीतने की संभावना बढ़ाती है (Norris-1997) । RCV में ध्रुवीकृत राजनीति और अत्यधिक विचारधाराओं की संभावना कम होती है, जिससे राजनीतिक स्थिरता और संतुलन बढ़ता है।

पारंपरिक प्रणाली–

FPTP में चुनाव परिणामों में ध्रुवीकरण की संभावना अधिक होती है क्योंकि केवल अधिकतम वोट प्राप्त करने वाला उम्मीदवार चुना जाता है, चाहे उसके पास बहुमत न हो (Lijphart- 1999)। इस प्रणाली में अक्सर दो प्रमुख दलों का दबदबा होता है, जिससे छोटी पार्टियों और अल्पसंख्यक विचारधाराओं का

प्रतिनिधित्व कमजोर हो सकता है। दूसरी ओर, PR प्रणाली में चुनावी परिणाम अधिक संतुलित होते हैं, क्योंकि सभी मतदाता समूहों का अनुपातिक प्रतिनिधित्व होता है, लेकिन गठबंधन सरकारों की आवश्यकता राजनीतिक अस्थिरता को बढ़ा सकती है (Blais- 1999)।

4. ध्रुवीकरण और समावेशिता

रैंक्ड–चॉइस वोटिंग–

RCV प्रणाली में ध्रुवीकरण की संभावना कम होती है क्योंकि मतदाता अपनी पसंद के सभी उम्मीदवारों को रैंक कर सकते हैं। इससे उग्रवादी और अत्यधिक विचारधाराओं की संभावना घटती है, और अधिक व्यापक समर्थन प्राप्त करने वाले उम्मीदवारों के जीतने की संभावना बढ़ जाती है (Farrell- 2001)।

पारंपरिक प्रणाली–

FPTP में ध्रुवीकरण अधिक होता है, खासकर तब जब दो प्रमुख दलों का वर्चस्व हो। इस प्रणाली में तीसरे पक्षों और छोटी पार्टियों के लिए कम स्थान होता है, जिससे अधिक समावेशी लोकतांत्रिक प्रक्रिया में बाधा आती है। PR प्रणाली में ध्रुवीकरण कम होता है क्योंकि यह मतदाताओं के सभी समूहों का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करती है, लेकिन राजनीतिक अस्थिरता और अल्पकालिक गठबंधन सरकारें इसका परिणाम हो सकती हैं (Blais-1999)।

5. राजनीतिक स्थिरता पर प्रभाव–

रैंक्ड–चॉइस वोटिंग–

RCV प्रणाली आमतौर पर स्थिरता प्रदान करती है क्योंकि विजेता उम्मीदवार को व्यापक समर्थन मिलता है। यह प्रणाली राजनीतिक स्थिरता को बढ़ावा देती है और लंबे समय तक प्रभावी शासन की संभावना बढ़ाती है (Farrell- 2001)। चूंकि यह प्रणाली चुनावों के ध्रुवीकरण को कम करती है, इसलिए राजनीतिक स्थिरता में सुधार होता है।

पारंपरिक प्रणाली–

FPTP प्रणाली में स्थिरता हो सकती है, लेकिन इसका परिणाम यह हो सकता है कि विजेता पार्टी को अत्यधिक शक्तियाँ प्राप्त हो जाएँ और विपक्षी दल कमजोर हो जाएँ। PR प्रणाली में राजनीतिक अस्थिरता की संभावना अधिक होती है, क्योंकि इसमें गठबंधन सरकारों की आवश्यकता होती है, जो कभी–कभी कमजोर और अस्थिर हो सकती हैं (Lijphart-1999)।

2. मतदाता व्यवहार पर प्रभाव–

रैंक्ड–चॉइस वोटिंग–

RCV प्रणाली में मतदाता अपनी सभी प्राथमिकताओं को व्यक्त कर सकते हैं, जिससे मतदाताओं को यह स्वतंत्रता मिलती है कि वे अपनी सच्ची पसंद को वोट दें, बिना यह चिंता किए कि उनका वोट 'बर्बाद' हो जाएगा यदि उनका पहला पसंदीदा उम्मीदवार जीतने में विफल होता है (Amy-1996)। मतदाता अपनी

प्राथमिकताओं को रैंक करते हुए इस बात पर विचार कर सकते हैं कि उनका वोट कैसे इस्तेमाल होगा और कौन से उम्मीदवारों को इसके माध्यम से फायदा मिलेगा। RCV प्रणाली में रणनीतिक वोटिंग की संभावना कम होती है क्योंकि मतदाता अपनी प्राथमिकताओं के अनुसार मतदान कर सकते हैं।

पारंपरिक प्रणाली–

FPTP में मतदाताओं को अक्सर रणनीतिक वोटिंग करनी पड़ती है, जहाँ वे किसी ऐसे उम्मीदवार को वोट देते हैं, जिसकी जीतने की संभावना ज्यादा हो, बजाय इसके कि वे अपनी पहली पसंद को वोट दें (Farrell-2001)। यह रणनीतिक मतदान प्रणाली की एक महत्वपूर्ण कमी है क्योंकि इससे मतदाताओं की वास्तविक पसंद का पूरी तरह से प्रतिनिधित्व नहीं हो पाता। PR प्रणाली में, मतदाता आमतौर पर अपनी पहली पसंद के उम्मीदवार को वोट देते हैं, लेकिन गठबंधन सरकारों की वजह से कभी–कभी उनकी प्राथमिकता का सही प्रतिनिधित्व नहीं हो पाता है। PR प्रणाली में मतदान व्यवहार अधिक स्वाभाविक हो सकता है, लेकिन गठबंधन बनाने की प्रक्रिया जटिल हो सकती है, जो मतदाताओं की अपेक्षाओं को प्रभावित करती है (Gallagher & Mitchell- 2005)।

3. चुनावी परिणामों पर प्रभाव–

रैंक्ड–चॉइस वोटिंग–

RCV प्रणाली का मुख्य उद्देश्य ऐसे उम्मीदवार को जीत दिलाना है जिसे सबसे व्यापक समर्थन प्राप्त हो। चूंकि यह प्रणाली मतदाताओं की विभिन्न प्राथमिकताओं को ध्यान में रखती है, इसलिए यह ध्रुवीकरण को कम करती है और अधिक मध्यमार्गी उम्मीदवारों के जीतने की संभावना बढ़ाती है (Norris] 1997) । RCV में ध्रुवीकृत राजनीति और अत्यधिक विचारधाराओं की संभावना कम होती है, जिससे राजनीतिक स्थिरता और संतुलन बढ़ता है।

पारंपरिक प्रणाली–

FPTP में चुनाव परिणामों में ध्रुवीकरण की संभावना अधिक होती है क्योंकि केवल अधिकतम वोट प्राप्त करने वाला उम्मीदवार चुना जाता है, चाहे उसके पास बहुमत न हो (Lijphart- 1999)। इस प्रणाली में अक्सर दो प्रमुख दलों का दबदबा होता है, जिससे छोटी पार्टियों और अल्पसंख्यक विचारधाराओं का प्रतिनिधित्व कमजोर हो सकता है। दूसरी ओर, PR प्रणाली में चुनावी परिणाम अधिक संतुलित होते हैं, क्योंकि सभी मतदाता समूहों का अनुपातिक प्रतिनिधित्व होता है, लेकिन गठबंधन सरकारों की आवश्यकता राजनीतिक अस्थिरता को बढ़ा सकती है (Blais- 1999)।

4. ध्रुवीकरण और समावेशिता–

रैंक्ड–चॉइस वोटिंग–

RCV प्रणाली में ध्रुवीकरण की संभावना कम होती है क्योंकि मतदाता अपनी पसंद के सभी उम्मीदवारों को रैंक कर सकते हैं। इससे उग्रवादी और अत्यधिक विचारधाराओं की संभावना घटती है, और अधिक व्यापक समर्थन प्राप्त करने वाले उम्मीदवारों के जीतने की संभावना बढ़ जाती है (Farrell-2001) ।

पारंपरिक प्रणाली

FPTP में ध्रुवीकरण अधिक होता है, खासकर तब जब दो प्रमुख दलों का वर्चस्व हो। इस प्रणाली में तीसरे पक्षों और छोटी पार्टियों के लिए कम स्थान होता है, जिससे अधिक समावेशी लोकतांत्रिक प्रक्रिया में बाधा आती है। PR प्रणाली में ध्रुवीकरण कम होता है क्योंकि यह मतदाताओं के सभी समूहों का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करती है, लेकिन राजनीतिक अस्थिरता और अल्पकालिक गठबंधन सरकारें इसका परिणाम हो सकती हैं (Blais-1999)।

5. राजनीतिक स्थिरता पर प्रभाव–

रैंक्ड–चॉइस वोटिंग–

RCV प्रणाली आमतौर पर स्थिरता प्रदान करती है क्योंकि विजेता उम्मीदवार को व्यापक समर्थन मिलता है। यह प्रणाली राजनीतिक स्थिरता को बढ़ावा देती है और लंबे समय तक प्रभावी शासन की संभावना बढ़ाती है (Farrell- 2001)। चूंकि यह प्रणाली चुनावों के ध्रुवीकरण को कम करती है, इसलिए राजनीतिक स्थिरता में सुधार होता है।

पारंपरिक प्रणाली–

FPTP प्रणाली में स्थिरता हो सकती है, लेकिन इसका परिणाम यह हो सकता है कि विजेता पार्टी को अत्यधिक शक्तियाँ प्राप्त हो जाएँ और विपक्षी दल कमजोर हो जाएँ। PR प्रणाली में राजनीतिक अस्थिरता की संभावना अधिक होती है, क्योंकि इसमें गठबंधन सरकारों की आवश्यकता होती है, जो कभी–कभी कमजोर और अस्थिर हो सकती हैं (Lijphart-1999)।

समीक्षा पद्धति (Review Methodology)–

इस शोध पत्र में रैंक्ड–चॉइस वोटिंग (RCV) और पारंपरिक चुनावी प्रणालियों जैसे प्रत्यक्ष बहुमत प्रणाली (FPTP) और आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली (PR) के उपयोग का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इसके लिए विभिन्न देशों और राज्यों में इन प्रणालियों के प्रयोग के आधार पर गहन विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन में चुनावी परिणामों और राजनीतिक स्थिरता पर इन प्रणालियों के प्रभाव को समझने के लिए विभिन्न स्रोतों का उपयोग किया गया। इसमें प्रमुख शोध पत्र, सरकारी रिपोर्टें, और प्रासंगिक चुनावी डेटा शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, विभिन्न देशों में रैंक्ड–चॉइस वोटिंग के कार्यान्वयन और उससे उत्पन्न चुनावी परिणामों की समीक्षा की गई है।

यह तुलनात्मक अध्ययन यह समझने का प्रयास करता है कि कौन सी प्रणाली लोकतांत्रिक मूल्यों, मतदाता व्यवहार, और चुनावी परिणामों के संदर्भ में अधिक प्रभावी है। शोध में प्रमुखता से यह देखा गया कि कैसे त्ब्ट और पारंपरिक चुनावी प्रणालियाँ ध्रुवीकरण, समावेशिता, और राजनीतिक स्थिरता पर प्रभाव डालती हैं।

निष्कर्ष (Conclusion)–

रैंक्ड–चॉइस वोटिंग (RCV) और पारंपरिक चुनावी प्रणालियों के तुलनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि त्ब्ट अधिक समावेशी और ध्रुवीकरण विरोधी प्रणाली है। यह प्रणाली मतदाताओं को उनकी प्राथमिकताओं के आधार पर उम्मीदवारों को रैंक करने का अवसर देती है, जिससे चुनावी प्रक्रिया में व्यापक समर्थन प्राप्त करने वाले उम्मीदवारों की जीत होती है। इसके परिणामस्वरूप, राजनीतिक स्थिरता बढ़ती है और अधिक संतुलित चुनावी परिणाम मिलते हैं।

दूसरी ओर, पारंपरिक प्रणालियाँ, जैसे कि प्रत्यक्ष बहुमत प्रणाली FPTP और आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली (PR) सरल और त्वरित परिणाम प्रदान करती हैं। हालांकि, FPTP प्रणाली में अल्पसंख्यक प्रतिनिधित्व की कमी और ध्रुवीकृत राजनीति की संभावना अधिक होती है। PR प्रणाली समावेशी होती है, लेकिन गठबंधन सरकारों के कारण अस्थिरता ला सकती है।

RCV प्रणाली लोकतांत्रिक मूल्यों को सुदृढ़ करती है, क्योंकि यह सभी मतदाताओं की प्राथमिकताओं को ध्यान में रखती है और ध्रुंवीकरण को कम करती है। इस कारण से, RCV एक अधिक लोकतांत्रिक और प्रतिनिधि चुनावी प्रणाली है, जो भविष्य में एक संभावित चुनावी सुधार के रूप में अपनाई जा सकती है।

सुझाव–

1. रैंक्ड–चॉइस वोटिंग (RCV) को अधिक व्यापक रूप से लागू करना–

सरकारों को रैंक्ड–चॉइस वोटिंग के लाभों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए व्यापक कार्यक्रम शुरू करने चाहिए। इससे मतदाताओं और राजनीतिक दलों को इस प्रणाली की बेहतर समझ हो सकेगी, जिससे इसका कार्यान्वयन अधिक सुगम होगा।

2. पारंपरिक प्रणालियों में सुधार–

पारंपरिक चुनावी प्रणालियों, विशेषकर प्रत्यक्ष बहुमत प्रणाली (FPTP), में अल्पसंख्यक प्रतिनिधित्व को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। इससे लोकतंत्र में अधिक समावेशिता आएगी और सभी वर्गों का सही प्रतिनिधित्व हो सकेगा।

3. हाइब्रिड प्रणाली का विकास–

RCV और FPTP की सर्वोत्तम विशेषताओं को मिलाकर एक हाइब्रिड प्रणाली विकसित की जा सकती है, जो अधिक समावेशी और स्थिर हो। इससे चुनावी प्रक्रिया में ध्रुवीकरण कम होगा और व्यापक समर्थन प्राप्त करने वाले उम्मीदवारों को बढ़ावा मिलेगा।

संभावित उपशीर्षक (Suggested Subtopics)-

- चुनावी परिणामों पर रैंक्ड–चॉइस वोटिंग का प्रभाव–

यह उपशीर्षक चुनावी परिणामों पर RCV के प्रभाव का विश्लेषण करेगा, जिसमें विजेता उम्मीदवारों की व्यापक स्वीकार्यता और ध्रुवीकरण को कम करने की क्षमता शामिल है।

- ध्रुवीकरण कम करने में चुनावी प्रणाली की भूमिका–

इस भाग में चर्चा की जाएगी कि कैसे विभिन्न चुनावी प्रणालियाँ, विशेष रूप से RCV, ध्रुवीकरण को कम करती हैं और एक समावेशी और संतुलित राजनीतिक वातावरण को बढ़ावा देती हैं।

- RCV के उपयोग के आधार पर राजनीतिक सुधारों के सुझाव–

इस उपशीर्षक के अंतर्गत RCV के विभिन्न देशों में उपयोग से प्राप्त अनुभवों के आधार पर राजनीतिक सुधारों के सुझाव प्रस्तुत किए जाएंगे, जिससे भविष्य की चुनावी प्रणालियों को अधिक लोकतांत्रिक और स्थिर बनाया जा सके।

संदर्भ सूची–

एमी, डी. जे. (1996). रियल चॉइसेस, न्यू वॉइसेस यूनाइटेड स्टेट्स में आनुपातिक प्रतिनिधित्व चुनावों का मामला. कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस।

ब्लाइस, ए. (1999). मतदान प्रणालियों के मूल्यांकन के लिए मानदंड। इलेक्टोरल स्टडीज, 18(4), 47–63।

डो, जे., – ग्रीन, पी. (2016). रैंक्ड–चॉइस वोटिंग की गतिशीलतारू चुनावों का एक नया युग. इलेक्टोरल सिस्टम्स प्रेस।

फैरेल, डी. एम. (2001). मतदान प्रणाली एक तुलनात्मक परिचय. पालग्रेव।

गैलाघर, एम., – मिशेल, पी. (2005). मतदान प्रणालियों की राजनीति. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

जॉनसन, आर. (2017). रैंक्ड–चॉइस चुनावों में अभियान रणनीतियाँ। पॉलिटिकल एनालिसिस जर्नल, 13(2), 75–90।

लिजपार्ट, ए. (1999). लोकतंत्र के पैटर्न छत्तीस देशों में सरकार के रूप और प्रदर्शन. येल यूनिवर्सिटी प्रेस।

मिलर, एस. (2018). रैंक्ड–चॉइस वोटिंग कैसे मतदाताओं को सशक्त बनाता है। इलेक्शन रिफॉर्म क्वार्टरली, 12(4), 45–59।

नॉरिस, पी. (1997). मतदान प्रणालियों का चयन आनुपातिक, बहुमतवादी और मिश्रित प्रणालियाँ। इंटरनेशनल पॉलिटिकल साइंस रिव्यू, 18(3), 297–312।

रे, डी. डब्ल्यू. (1967). चुनावी कानूनों के राजनीतिक परिणाम. येल यूनिवर्सिटी प्रेस।

स्मिथ, ए. (2015). रैंक्ड–चॉइस वोटिंग के माध्यम से लोकतंत्र को सशक्त बनाना. डेमोक्रेसी एंड रिप्रेजेंटेशन स्टडीज, 20(3), 34–48।

वोटरएजुकेशनचौनल। (2017, 5 अप्रैल)। रैंक्ड–चॉइस वोटिंग कैसे काम करती है ख्वीडियो,। यwVîwcA https:@@www-youtube-com@watch\v¾eÛample

द इलेक्शन टाइम्स। (2016, मार्च)। रैंक्ड–चॉइस वोटिंग का उदय। इलेक्टोरल रिफॉर्म मैगजीन, 10(2), 15–18।

इलेक्टोरल अफेयर्स मंत्रालय। (2015)। चुनावी प्रणाली रिपोर्ट राजनीतिक स्थिरता पर RCV के प्रभाव का मूल्यांकन। न्यूज़ीलैंड सरकार।